बच्चे जंगली घास नहीं

"बड़े-बूढ़े झूठ थोड़े ही बोलते हैं," बातों के बीच रधिया ने हाथ मटकाते हुए कहा। रधिया गांव के मुखिया की घरवाली है। इसलिए उसकी बात का विरोध करने की हिम्मत किसी में नहीं है। कमला अभी-अभी ब्याही आई है। आठवीं पास है। शहर में कुछ दिन मामा के यहां रही थी। वह रधिया की बातों से मन ही मन कुढ़ती है। इस समय भी वह उठ खड़ी होती है।

"कहां जा रही है कमला!" रधिया ने टोका।

"काकी! मुन्ना जाग गया होगा। दांत निकल रहे हैं। दवा देनी है।"

"दांत निकलने में भला दवा क्या देनी। हंसते-खेलते दांत निकल आते हैं। कुछ दिन दस्त आएंगे, बुखार होगा और वह दूध नहीं पियेगा। यह तो होता ही है।"

"नहीं चाची! ज़्यादा दस्त आने से बच्चे के शरीर में पानी की कमी हो जाती है और अतिसार में वह मर भी सकता है। बच्चे के लिए यह बहुत देखभाल का समय है। उसे ज़रूर ऐसी दवा देनी चाहिए जिससे दांत जल्दी और आसानी से निकल आएं। अच्छा चाची! नमस्ते।"

"देखो तो इसका दिमाग," रधिया ने कहा।

सुमन से रहा नहीं गया। बोल ही पड़ी– "चाची! कमला ग़लत नहीं कह रही। पिछले साल सोहन का बेटा और गिरधारी की लड़की दांत निकलने में चल बसे थे।"

"बच्चे भगवान की देन हैं। वही जन्म देता है, वही उन्हें पालता है। हम कौन हैं?" रधिया ने कहा।

"चाची! बच्चे भगवान की देन हैं, यह बात अब लागू नहीं होती। हमारे परिवार कल्याण केंद्र की डाक्टरनी बताती है कि बच्चा जब चाहो तब ही हो।"

"वह कल की छोकरी चार अक्षर क्या पढ़ आई, हमें समझायेगी," रधिया ने मुंह बनाते हुए कहा।

"चाची! औरत भेड़-बकरी नहीं है। वह बच्चे का लालन-पालन करने लायक हो जाए, उसकी सेहत बने, तभी बच्चा होना चाहिए," सुमन ने हंसकर समझाना चाहा।

"तुम लोग जब से गांव में आई हो सबका दिमाग़ खराब कर रही हो। मेरे सात बच्चे हुए थे," रधिया ने गर्व से कहा।

"चाची! तुम्हारे घर में सास, ननद, देवरानी, जेठानी सब थीं। बच्चे पल गये।"

"हां, हां, हमने तो जैसे अपनी छाती का दूध ही नहीं पिलाया," रधिया ने चिढ़कर कहा।

"चाची! सिर्फ दूध पिलाने से बच्चे नहीं पल जाते। हम खेत में बीज डालते हैं, सिंचाई करते हैं। पौधा निकलने पर उसकी देखभाल करते हैं। सोचते हैं आंधी-पानी न आए। ऐसे ही बच्चों के बारे में सोचना होता है।"

"हां भई! मेरे बच्चे तो जंगली घास थे न, यूं ही बढ़ गए," रधिया ने मुंह बिचकाया।

"चाची! बच्चे न भगवान की देन हैं, न वे

अपने आप पल जाते हैं। बच्चे इतने नाजुक होते हैं कि अगर हम उनका ध्यान न रखें तो न जाने कौन-कौन सी घातक बीमारियां लग जाएं, जो पूरी उम्र नहीं जातीं। डाक्टरनी जी कह रही थीं कि डी.पी.टी. के तीन टीके लगवाने से बच्चों को रोग नहीं लगते। काली खांसी, पोलियो जैसी बीमारियां नहीं होतीं।"

"यह बात तो तुम ठीक कह रही हो सुमन! अपने गांव में कितने ही बच्चे काली खांसी के रोगी हैं। बिरजू का लड़का पोलियों की वजह से खटिया पर पड़ा रिरियाता रहता है," रधिया ने बताया।

"चाची! जमुना के लड़के को दिन में भी नहीं दिखाई देता। उसे रतौंधी आती है," विमला बोली।

"चाची! अब बताओ, बच्चे अपने आप पल जाते तो इन बच्चों को रोग क्यों लगते? ये भी और बच्चों की तरह हंसते-खेलते फिरते।" सुमन ने हावी होकर कहा।

"तुम ठीक कहती हो। मैं भी कल सब औरतों से कहूंगी कि डाक्टरनी जी से जांच करवा लो।" रधिया को देखकर सब औरतें खुश थीं। □

सुभद्रा सक्सेना